بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 13 दिसम्बर **2024**, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

सिरिय्या ए क़ुरता (क़ुर्ता का सैन्य अभियान) के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयानI

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- .12.24

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

uतशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय के सम्बन्ध में आज एक सैन्य अभियान का वर्णन करूंगा जो सिरिय्या-ए-क़ुरता कहलाता हैI यह सिरिय्या दस मुहर्रम 6 हिजरी में हुआ और आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मुसलमा रज़ी. को तीस सवारों के साथ क़ुरता नामक स्थान की ओर भेजाI इस अभियान के लिए आप रज़ी. उन्नीस रातें मदीने से बाहर रहे और उनत्तीस मुहर्रम 6 हिजरी को मदीना वापस आएI

इसके विस्तारण में विभिन्न किताबों एवम् इतिहास से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने जो लिखा है, वह इस प्रकार है कि अभी 6 हिजरी शुरू ही हुआ था तथा चाँद की तिथियों के साल में पहले महीने अर्थात मुहर्रम के शुरू की ही तारीखें थीं कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को नजद के वासियों की ओर से शंका की सूचनाएं मिलींI यह आशंका क़ुरता नामक क़बीले की ओर से थी जो क़बीला बनू बकर की एक शाखा थी तथा नजद के इलाक़े में ज़िर्या नाम से आबाद थी, जो मदीना से सात दिनों की यात्रा करने जितनी दूरी पर स्थित थाI

हुज़ूरे अनवर ने इसके विषय में फ़रमाया कि यह स्पष्ट हो गया कि यह एक दुश्मन क़ौम थी जो मदीने पर हमला करने की तय्यारी कर रही थीI इसकी रोकथाम के लिए

आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सैन्य दल भेजा था और वहां भी यह नर्मी दिखाई कि महिलाओं और बच्चों को कुछ नहीं कहा गयाI

इस अवसर पर सुमामा बिन उसाल के बन्दी बनाए जाने और इसलाम क़ुबूल करने का भी वर्णन मिलता हैI इसके विस्तारण में सीरत खातमुन्नबिय्यीन स. में लिखा है कि इस अभियान अर्थात सिरिय्या-ए-क़ुरता से वापसी पर सुमामा बिन उसाल के क़ैद किए जाने की घटना घटित हुईI एक बार आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक सन्देश वाहक उसके इलाक़े में गया तो उसने समस्त युद्ध के नियमों को दरकिनार करके उसकी हत्या का षड्यंत्र किया बल्कि एक बार उसने ख़ुद आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या का भी निश्चय कियाI जब मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. की पार्टी सुमामा को बन्दी बनाकर लाई तो उन्हें यह पता नहीं था कि यह कौन व्यक्ति है, बल्कि उन्होंने इसे केवल सन्देह के कारण क़ैद कर लिया था और ऐसा लगता है कि सुमामा ने भी अत्यन्त चतुराई से उन पर अपनी पहचान प्रकट नहीं होने दी, क्यूँकि वह जानता था कि मैं इसलाम के विरुद्ध भयानक अपराध कर चुका हूँ और यदि इसलाम के इन आत्मसम्मानित सैनिकों को यह पता चल गया कि मैं कौन हूँ तो वे संभतः मुझ पर यातना करें अथवा मुझे मार ही डालेंI किन्तु ख़ुद आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से वह सुंदर व्यवहार की आशा रखता थाI अतः मदीने की वापसी तक मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. की पार्टी पर सुमामा की पहचान गुप्त रहीI

मदीना पहुँच कर जब सुमामा को आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पेश किया गया तो आप स. ने उसे देखते ही पहचान लिया और मुहम्मद बिन मसलमा तथा उनके साथियों से फ़रमाया कि जानते हो यह कौन है? उन्हों ने कहा कि नहीं जानते, जिस पर आप स. ने वास्तविकता उन पर प्रकट कर दीI इसके बाद आप स. ने अपने स्वभाव के अनुकूल सुमामा के साथ शुभ व्यवहार किये जाने का निर्देश दिया और फिर घर के भीतर जाकर इरशाद फ़रमाया कि जो कुछ खाने के लिए तय्यार हो सुमामा के लिए बाहर भिजवा दोI इसके साथ ही आप स. ने सहाबा रज़ी. से भी इरशाद फ़रमाया कि सुमामा को किसी दुसरे मकान में रखने के बजाए मस्जिद ए नबवी के आँगन में ही किसी खम्बे से बाँध कर क़ैद रखा जाए, जिससे आप स. का अभिप्रायः यह था कि आप स. की मजलिसें तथा मुसलमानों की नमाज़ें सुमामा की आँखों के सामने आयोजित हों और उसका दिल इन रूहानी दृश्यों से प्रभावित होकर इसलाम की ओर झुक जाएI

उन दिनों में आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम हर दिन सुबह के समय सुमामा के निकट तशरीफ़ ले जाते और हाल पूछ कर फ़रमाते कि सुमामा बताओ अब क्या इरादा है? सुमामा जवाब देता! ऐ मुहम्मद (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) यदि आप मेरी हत्या कर दें तो आप स. को इसका अधिकार है, क्यूँकि मेरे विरुद्ध हत्या का आरोप है, परन्तु यदि आप उपकार करें तो आप मुझे आभारी पाएँगे, और यदि आप मुझे स्वतंत्र करने के बदले कुछ धन लेना चाहें तो मैं धनराशी देने के लिए भी तय्यार हूँI तीन दिन तक यही सवाल व जवाब होता रहा, अन्ततः तीसरे दिन आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वंम सहाबीयों से इरशाद फ़रमाया कि सुमामा को खोल कर आज़ाद कर दोI सहाबीयों ने तुरन्त आज़ाद कर दिया और सुमामा जल्दी जल्दी मस्जिद से निकल कर बाहर चला गयाI सम्भवतः सहाबा रज़ी. यह समझे होंगे कि अब वह अपने वतन के ओर वापस लौट जाएगा, किन्तु आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम समझ चुके थे कि सुमामा का दिल जीता

जा चुका है, अब उस पर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिव्य शक्ति का प्रभाव हो चुका है, और यही परिणाम निकलाI अतएव वह एक निकट के बाग़ में गया और वहां से नहा धोकर वापस आया और आते ही आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर मुसलमान हो गयाI इसके बाद उसने आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम)! एक समय था कि मुझे सारी दुनिया में आप स. के असतित्व और आपके दीन से और आपके नगर से सर्वाधिक दुश्मनी थी, लेकिन अब मुझे आप स. की ज़ात और आप स. का दीन और आप स. का नगर सर्वाधिक प्रिय हैंI

मुसलमान होने के कारण सुमामा रज़ी. ने आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह स.! जब आप स. के आदमियों ने मुझे क़ैद किया था तो उस समय मैं ख़ाना-ए-काबा के उमरे के लिए जा रहा था, अब मुझे क्या आदेश है? आप स. ने इसकी अनुमति प्रदान की और दुआ की, और सुमामा मक्के की और रवाना हो गएI वहां पहुँच कर सुमामा ने ईमान के जोश में कुरैशियों के बीच जाकर सार्वजनिक रूप में तबलीग़ शुरू कर दीI क़ुरैश ने यह दृश्य देखा तो उनकी आँखों में खून उतर आया और उन्होंने सुमामा को पकड़ कर निश्चय किया कि उसकी हत्या कर दें, परन्तु फिर यह सोच कर कि वह यमामा के इलाक़े का सरदार है और यमामा के साथ मक्का वालों के घनिष्ट व्यापारिक सम्बन्ध हैं, वे इस इरादे से रुक गए और सुमामा को बुरा भला कह कर छोड़ दियाI परन्तु सुमामा की प्रकृति में बड़ा जोश था तथा कुरैश के वे अत्याचार जो वे आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा रज़ी. पर करते रहे थे, वे सब सुमामा की आँखों के सामने थेI उसने मक्का से विदा होते समय कुरैश से कहा कि ख़ुदा की क़सम! भविष्य में यमामा के इलाक़े से तुम्हें अनाज का एक दाना नहीं मिलेगा, जब तक कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम इसकी आज्ञा न देंगेI

अपने वतन पहुँच कर सुमामा रज़ी. वास्तव में मक्के की ओर यमामा के यात्री दलों का आना जाना रोक दिया और चूंकि मक्का वालों की ख़ुराक का बड़ा भाग यमामा की तरफ से आता था इस लिए इस व्यापार के बंद हो जाने से कुरैशे मक्का घोर कठिनाई में पड़ गए और अभी अधिक समय नहीं बीता था कि उन्होंने घबराकर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पत्र लिखा कि आप सगे सम्बन्धियों से सहानुभूति की शिक्षा देते हैं और हम आप स. के भाई हैं, हमें इस दुविधा से मुक्ति दिलाएंI उस समय मक्का वाले इतना अधिक घबराए हुए थे कि उन्होंने केवल इस पत्र पर ही बस नहीं की, बल्कि अपने सरदार अबू सुफ़यान बिन हरब को भी आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भिजवायाI जिसने आँहज़रत स. की सेवा में उपस्थित होकर ज़बानी भी अत्यधिक रोना रोया और अपनी कठिनाई बता कर दया करने की प्रार्थना कीI जिसपर आँहज़रत स. ने सुमामा बिन उसाल को निर्देश भेजा कि कुरैश के इन यात्री दलों की, जिनमें मक्के वालों की ख़ुराक़ का सामान हो, उनको न रोका जाएI अतः इस व्यापार का क्रम पुनः जारी हो गया और मक्के वालों को इस कठिनाई से मुक्ति मिलीI

हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम अब्दुल लतीफ़ साहब आफ़ यू.के. के जनाज़े की नमाज़ हाज़िर तथा अन्य पाँच मृतकों के जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई, जिनमें दो शहीद निष्ठावान, मुकर्रम तय्यब अहमद शहीद पुत्र मुकर्रम मंज़ूर अहमद साहब आफ़

राजनपुर, वर्तमान रावल पिंडी, जिनको एक अह्मदिय्यत के विरोधी ने पाँच दिसम्बर को कुल्हाड़ी से वार करके शहीद कर दिया था और अजीज़म मुहिन्द मुवय्यद अबू अवाद साहब आफ़ ग़ज़ा फ़लिस्तीन भी शामिल थे, जो एक ड्रोन हमले में बीस साल की आयु में शहीद हो गए थेI इसी तरह मुकर्रम डा. मसूद अहमद मलिक साहब पूर्व नायब अमीर अमरीका और मुकर्रम शब्बीर अहमद लोधी साहब पुत्र मियां मुहम्मद शफ़ी साहब और मोलवी मुहम्मद अय्यूब बट साहब दरवेश का सद्वर्णन कियाI

मोलवी अय्यूब बट साहब दरवेश के वर्णन में हुजूरे अनवर ने फ़रमाया कि इनके परिवार में अहमदिय्यत इनकी माता जी मुकर्रमा करीम बीबी साहिबा के माध्यम से आई थीI मृतक के लेख के अनुसार आपने पूरी जवानी में सपने में आँहज़रात स. को घोड़े पर सवार देखाI इस सपने के स्वप्नफल को आपके पिता जी ने इस प्रकार बताया कि इनको अल्लाह तआला दीन का काम करने की तौफीक़ देगाI 1939 में मौलवी साहब ने अपना जीवन अर्पण कर दिया और व्यवस्थापकों की ओर से आपको ईरान जाने का निर्देश मिलाI क़ाबुल जाने के लिए कोएटा में थे तो अमीर साहब जमाते अहमदिया कोएटा ने कहा कि आपको क़ादियान बुलाया गया हैI देश विभाजन का ज़माना था, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. हिजरत फ़रमाकर लाहौर में निवास करते थेI जब मोलवी साहब लाहौर पहुंचे तो इनको बताया गया कि क़ादियान जाने के लिए यह अंतिम ट्रक जा रहा है और इसके बाद सम्भवतः कोई अन्य ट्रक न जा सके, इस लिए आप क़ादियान चले जाएँI वहां पहुँच कर आपको विभिन्न सुरक्षा के स्थानों पर डयूटियाँ देने का अवसर मिला, फिर इनको हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के निर्देश पर हिन्दुस्तान में तबलीगी मुअल्लिम के रूप में झांसी, यू.पी. में भिजवा दिया गया, बड़े सुन्दर रंग में वहां उन्होंने तबलीग़ कीI

हिन्दुस्तान में विभिन्न स्थानों पर इनको सेवा करने का सामर्थ्य मिला और इन्होंने इस दौरान मैदाने अमल में ही होमियोपैथी की डिग्री भी प्राप्त कीI इनके माध्यम से अनेक दिव्य प्रकृति के लोगों को अह्मदिय्यत में शामिल होने की तौफीक़ भी मिलीI इनके एक बेटे डा. महमूद बट साहब और बहू डा. मन्जू साहिबा वाकिफ़े ज़िन्दगी हैंI इन्होंने एक लम्बी अवधि घाना में सेवा की है और आजकल नूर हस्पताल क़ादियान में सेवा कर रहे हैंI इसी तरह इनके दूसरे बेटे भी अमरीका में डाक्टर हैंI अल्लाह तआला मरहूम के दर्जे बुलंद फ़रमाए और इनकी संतान तथा नस्ल को भी इनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएI

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131